International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 463-464

श्रम का अर्थ एवं श्रम संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण

डॉ0 राजेश कुमार
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, सेंट विल्फ्रेड पी.जी. कॉलेज, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश
श्रम की अवधारणा विभिन्न सामाजिक राजनीतिक मान्यताओं तथा विचारधाराओं से जुडी हुई है। पश्चिमी देशों में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप पूंजीवाद की व्यवस्था के अभ्युदय के साथ ''मांग स्वंपूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार श्रम को वस्तु के रूप में देखा जाने लगा जिसे तत्कालीन अर्थशास्त्रियों ने श्रम को वस्तुरूपी अवधारणा के रूप में संबोधित किया।
व्यापक अर्थ में कभी–कभी श्रम को श्रमशक्ति का पर्यायवाची समझा जाता है। श्रम शक्ति में उन समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। जो न केवल रोजगार में लगे हुए अधिक रोजगार प्राप्त करने की तलाश में होते है जैसे–बैंक कर्मचारी, खान में काम करने वाले श्रमिक, डॉक्टर, वकील, दुकानदार व्यापारी तथा काम चाहने वाला बेरोजगार व्यक्ति आदि सभी श्रम शक्ति वह है जो विविध प्रकार के श्रम का समूह है।
अर्थशास्त्र में श्रम का संबंध मनुष्य के श्रम से है। श्रम मनुष्य का वह शारीरिक एवं मानसिक प्रयत्न है जो पारिश्रमिक प्राप्त करने की आशा से लिये जाते है फ्रेढाकि टेनरलिलान और फ्रेक गिलवर्ट एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने उद्योगों में वैज्ञानिक प्रबंध की अवधारणा पर विचार किया।
श्रम की मशीनी धारणा ने श्रमिक को एक मशीन की भांति काम करने का औजार समझा। औद्योगिक जीवन में बढते तनावपूर्ण संकट के परिणामस्वरूप श्रम विधिशास्त्र के अध्ययन का क्षेत्र अत्यन्त आवश्यक हुआ है। श्रमिक वर्ग से संबंधित समस्याऐं जैसे– औद्योगिक संबंध, मजदूर नीति, सामाजिक सुरक्षा श्रम कल्याण, प्रबंध में श्रमिकों की सहभागिता आदि अभिन्न रूप से श्रम विधि शास्त्र के अध्ययन से जुडी है।

मूल शब्द : पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, श्रम शक्ति, श्रम, श्रम विधिशास्त्र

प्रस्तावना

श्रम का अर्थ

प्राचीन समय में श्रम के संबंध में दो दृष्टिकोणों की प्रधानता थी। इसमें पहला दृष्टिकोण वस्तु दृष्टिकोण था। जिसके अन्तर्गत श्रम को वस्तु की भाँति खरीदा एवं बेचा जाता था। श्रमिक को कम पारिश्रमिक देकर उसकी सहायता से अधिकतम लाभ अर्जित करना पंजीपतियों का उद्देश्य रहा है। दूसरा दृष्टिकोण सहभागिता का था जिसके अन्तर्गत श्रमिकों को एक निम्न वर्ग एवं आर्थिक दृष्टि से दुर्बल माना जाता था। इसलिए धनी वर्ग उनकी मदद करना अपना कर्त्तव्य समझता था।
'श्रम' से तात्पर्य मानव द्वारा किय गये समस्त शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक कार्यों से है जो वस्तुतः अर्थ–प्राप्ति के लिए किया जाता है। मार्शल अल्फ्रेड के शब्दों में 'श्रम' को कार्य करने के प्रत्यक्ष रूप से मिलने वाले आनन्द या सुख के अलावा आंशिक अथवा पूर्ण रूप से आर्थिक लाभ की दृष्टि से किये जाने वाले शारीरिक या मानसिक कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
'श्रम' की अवधारणा विभिन्न सामाजिक राजनीतिक मान्यताओं तथा विचारधाराओं से जुड़ी हुई है। पश्चिमी देशों में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरुप पूंजीवादी व्यवस्था के अभ्युदय के साथ ''मांग स्वंपूर्ति' के सिद्धान्त के अनुसार श्रम को वस्तु के रूप में देखा जाने लगा, जिसे तत्कालीन अर्थशास्त्रियों ने 'श्रम को वस्तुरूपी' अवधारणा के रूप में संबोधित किया। इसके विपरीत अर्न्राष्ट्रीय श्रम संगठन की 26वीं बैठक में पारित किये गये फिलेडेलफिया घोषणा–पत्र में इस विचार–बिन्दु पर जोर दिया गया कि श्रम कोई वस्तु नहीं है, अतएव इसे मांग स्वंपूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार खरीद–फरोख्त की वस्तु नहीं माना जा सकता।
व्यापक अर्थ में कभी–कभी 'श्रम' को श्रमशक्ति (लेबर फोर्स) का पर्यायवाची समझा जाता है। श्रम शक्ति में उन समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है जो न केवल रोजगार में लगे हुए अपितु रोजगार प्राप्त करने की तलाश में होते है जैसे– बैंक–कमचारी, खान में काम करने वाले श्रमिक, डॉक्टर, वकील, दुकानदार, व्यापारी तथा काम चाहने वाला बेरोजगार व्यक्ति आदि सभी, श्रम शक्ति वह है जो विविध प्रकार के श्रम का समूह है किन्तु यह समूह समाज के अन्य समूहों जैसे– गृहणियों, विद्यार्थियों, सेवानिवृत्त व्यक्तियों, बच्चों व बूढ़ों आदि से भिन्न होता है। 'श्रम' शब्द का प्रयोग सीमित अर्थ में भी किया जाता है। सीमित अर्थ में 'श्रम' का तात्पर्य केवल 'कुशल श्रम' से है। कुशल श्रम में सामान्यतया ऐसे दस्तकारों, तकनीशियनों को ही सम्मिलित किया जाता है जो मजदूरी पर काम करते हैं।

अर्थशास्त्र में श्रम

श्रम का आशय किसी भी ऐसे प्रयत्न से है जो किसी कार्य को करने हेतु किया जाता हो, किन्तु अर्थशास्त्र में श्रम का संबंध मनुष्य के श्रम से है। पशुओं के श्रम को अर्थशास्त्र में श्रम नहीं कहते है सभी प्रकार के मानवीय श्रम को भी अर्थशास्त्र में श्रम नहीं कहते है। उदाहरणस्वरूप– किसी गायक का आनन्द के बिना गाना, माता द्वारा पुत्र का पालन–पोषण इत्यादि को श्रम की संज्ञा नहीं दी जाती है, बल्कि श्रम मजदूरी मिलने के उद्देश्य से मनुष्य द्वारा किया गया प्रयत्न है।
प्रो. थॉमस ने भी बताया है कि 'श्रम मनुष्य का वह शारीरिक एवं मानसिक प्रयत्न है जो पारिश्रमिक प्राप्त करने की आशा से किये जाते है'।

प्रो. मार्शल के अनुसार 'श्रम का मतलब मनुष्य के आर्थिक कार्य से है चाहे वह हाथ से किया जाये या मस्तिष्क से'।

अर्थशास्त्र में श्रम के प्रमुख गुण निम्नांकित है

1. अर्थशास्त्र में श्रम के अन्तर्गत केवल मानवीय प्रयत्न ही सम्मिलित है।
2. अर्थशास्त्र में श्रम का मतलब शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के प्रयत्नों से है।
3. अर्थशास्त्र में मनुष्य के केवल उन्हीं प्रयत्नों को श्रम कहा जाता है जो किसी आर्थिक उद्देश्य से किये जाते है। अर्थशास्त्र में धनोत्पादन के उद्देश्य से किये जाने वाले मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक सभी प्रयत्नों को श्रम कहते हैं।

संदर्भ सूची

1. बालेश्वर पाण्डेय : लेबर वेलफेयर इन इंडिया, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1975।
2. जे. बर्बाश : यूनियन्स एण्ड यूनियन लीडरशिप, हार्पर एण्ड रॉ, न्यूयॉर्क, 1959।
3. एच. एण्ड फ्रेंस बाकर : सेन्ट्रलाइजेशन एण्ड डी सेन्ट्रल लाईजेशन इन इण्डस्ट्रीयल रिलेशन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, अमेरिका, 1954।
4. जे.ए. बंक : इन्डस्ट्रीयल पार्टिशिपेशनः थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस, लिवरपूल यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1963।